1

सैन्य अध्ययन का महत्त्व

सैन्य अध्ययन को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे रक्षा और रणनीतिक शिक्षा, सैन्य विज्ञान, युद्ध और राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन, युद्ध और रणनीति अध्ययन। वर्तमान में सैन्य अध्ययन को भारत में केवल कुछ ही कालेजों/विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। इससे दो प्रश्न उभरते हैं। पहला यह कि सैन्य अध्ययन का महत्व क्या है? दूसरा यह कि एक युवा विद्यार्थी के रूप में आपको इस विषय का अध्ययन क्यों करना चाहिए? जैसा कि आपने इतिहास विषय में पढ़ा होगा कि मनुष्य सदैव युद्धों के कारण दु:ख झेलता रहा है परन्तु उसने युद्ध लड़ना कभी नहीं छोड़ा। आज के युग में युद्ध की आवश्यकताएं बदल गई हैं और युद्ध के तरीके भी बदल गए हैं।

मजबूत सशस्त्र सेना रखना तथा विभिन्न खतरों से लोगों को बचाना हमारे जीवन की निरन्तर विशेषता रही है। सैन्य सुरक्षा का ज्ञान, सशस्त्र सेनाओं को युद्ध के लिए किस प्रकार तैयार किया जाता है तथा युद्ध की कला क्या है–जैसे प्रश्नों के उत्तर सैन्य अध्ययन से ही प्राप्त होते हैं। सेना, सरकार और सशस्त्र बलों के बारे में जानकारी से लोग अधिक जागरुक हो जाते हैं और स्थितियों से बेहतर ढंग से निपट सकते हैं। सैन्य अध्ययन से नेताओं को मातृभूमि की रक्षा करने और सशस्त्र बलों का महत्व समझने में सहायता मिलती है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- सैन्य अध्ययन के अर्थ और महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- सैनिकों के लिए सैन्य अध्ययन के पाठ्यक्रम का वर्णन कर सकेंगे;
- सैन्य अध्ययन के महत्व पर बल दे सकेंगे।

1.1 सैन्य अध्ययन की प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही सैन्य अध्ययन में सेना से सम्बन्धित सभी विषयों तथा राजाओं और सैनिकों के युद्ध कौशल में प्रशिक्षण के बारे में वर्णन होता है। इसको सैन्य संगठनों के अध्ययन, देश

टिप्पणी

के सुरक्षा खतरों के विश्लेषण, युद्ध की कला तथा देश की रक्षा हेतु सशस्त्र बलों का प्रयोग करने के तरीकों के रुप में परिभाषित किया जा सकता है।

आइये, हम परिभाषा में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का अर्थ समझें–

क) **सैन्य संगठनों का अध्ययन**– प्राचीन सेनाओं का प्रारम्भ पैदल सैनिकों से हुआ था और बाद में चतुरंग सेना का गठन किया गया जिसमें रथ, हाथी, घुड़सवार और पैदल सैनिक होते थे। हमारे प्राचीन गुरुओं ने सेना के संगठन के बारे में विचार किया। उन्होंने यह विषय पढ़ाया और सैनिकों ने घोड़ों, हाथियों और हथियारों का प्रयोग करना सीखा। सेना के संगठनों का अध्ययन प्राचीन काल से प्रारम्भ हुआ और आज तक चल रहा है।

ख) **राष्ट्रीय सुरक्षा** – किसी भी देश या साम्राज्य को शत्रुओं, पर्यावरण तथा प्राकृतिक आपदाओं के खतरों का सामना करना पड़ता है। खतरों को समझना तथा उन पर काबू पाना महत्वपूर्ण है। अतः राष्ट्रीय सुरक्षा का विश्लेषण यह बताता है कि सभी खतरों के लिए कितनी बड़ी सेना की जरुरत होगी तथा उनसे लड़ने के लिए सेना को कैसे संगठित किया जाए।

ग) **युद्ध की कला** – दो सेनाओं के बीच लड़ने की गतिविधि को युद्ध कहा जाता है। जब दो राष्ट्र लड़ते हैं तो वे विभिन्न प्रकार की रणनीतियों और तरीकों का प्रयोग करते हैं। शत्रु सेना के विरुद्ध जीत हासिल करने के लिए सेना को विभिन्न रणनीतियों और तरीकों के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसलिए यह विषय युद्ध में प्रयुक्त रणनीतियों और तरीकों को सीखने के लिए सैनिकों और अफसरों के लिए अति आवश्यक है।

1.2 सैन्य अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम

सैन्य अध्ययन की परिभाषा के बाद आइये, हम सैन्य अध्ययन में शामिल किए जाने वाले विषयों पर विचार करें।

1) **हथियारों में कौशल :** सैनिकों को निजी हथियारों का प्रयोग करना तथा प्रतिदिन अभ्यास करना सिखाया जाता था ताकि वह हथियारों को प्रयोग करने में निपुण हो सकें। प्राचीन सेनाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के हथियार प्रयोग किए गए थे, जिनमें प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। इनमें विभिन्न प्रकार की गदा, आदिवासियों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न हथियार तथा दक्षिण भारत की प्राचीन सेनाओं द्वारा प्रयोग किए हथियार शामिल हैं।

2) **धनुष और तीर प्रयोग करने का कौशल :** उस समय सैनिकों के लिए एक प्रमुख कौशल युद्ध में तीर और धनुष का प्रयोग करना सीखना था।

सैनिकों के लिए घुड़सवारी तथा घोड़े पर बैठकर लड़ना अन्य ज़रुरी कौशल थे।

1.2.1 सैन्य अध्ययन के महत्वपूर्ण पक्ष

1) **क्षेत्र :** युद्ध के क्षेत्र का अध्ययन करना। यह विषय शत्रु से रक्षा, किले (पुराने समय में) और बाधाएं निर्मित करने में सहायता करता है।

2) **युक्तियां :** युद्ध में सेना की इकाईयों को विशेष स्थिति में तैनात करने की कला को युक्ति कहा जाता है। अलग अलग क्षेत्रों और अलग अलग प्रकार के शत्रुओं के विरुद्ध नई-नई युक्तियों को सोचना पड़ता है। (पहाड़ों में लड़ना, मैदानों में लड़ने से अलग होता है)

3) **मानचित्र और एस्ट्रानामी :** इसकी आवश्यकता एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए होती है। प्राचीन समय में मानचित्र नहीं होते थे और सेनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए दिशाओं, सूर्य की गति तथा तारों का प्रयोग करती थी।

4) **नेतृत्व :** चरित्र, योग्यता और मानसिक शक्ति के आधार पर सृजनात्मक कौशल सैनिक नेतृत्व कहलाता है। युद्ध लड़ने में यह एक सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है।

5) **सैन्य सामग्री :** लड़ाई में सेनाओं को आवश्यक वस्तुओं से सम्पन्न करना तथा उनकी आपूर्ति करना अनिवार्य होता है। युद्ध जीतने के लिए सैन्य सामग्री आवश्यक होती है।

1.2.2 युद्ध की आचार संहिता

पुराने समय से ही मानव न्याय के लिए 'धर्म युद्ध' लड़ता रहा है। इसका अर्थ है कि राजा केवल तभी युद्ध लड़ते थे जब यह राज्य के कल्याण के लिए ज़रूरी होता था। इसी प्रकार योद्धा अथवा सैनिकों के पास भी एक आचार संहिता होती थी। अनुशासित होना पहला नियम था। प्राचीन भारत में सेनाओं द्वारा पालन किए जाने वाला नियमाचार या कानून निम्न थे-

- जिसके पास हथियान न हों उसके साथ किसी योद्धा (क्षत्रिय) को नहीं लड़ना चाहिए।
- प्रत्येक योद्धा को केवल एक शत्रु से लड़ना चाहिए और उसके अपंग होने के बाद नहीं लड़ना चाहिए।
- बूढे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों तथा पीछे हटने वाली सेना और होंठो में तिनका दबाए व्यक्ति अथवा बिना शर्त समर्पण करने वालों को नहीं मारना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. सैन्य अध्ययन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. युद्ध की कला का क्या अर्थ है?

3. सैन्य अध्ययन में पढ़ाए जाने वाले किन्हीं तीन विषयों के नाम लिखिए।

1.3 हमें सैन्य अध्ययन को क्यों पढ़ना चाहिए?

सैन्य अध्ययन किसी देश की सेना के सभी सैनिकों और अफसरों को नि:संदेह पढ़ाया जाना चाहिए। जब हम यह कहते हैं कि सैनिकों को यह विषय पढ़ना चाहिए तो हमें इसके अध्ययन के कारणों को भी समझना चाहिए।

इस पाठ में पाठ्यक्रम को देखने के बाद सभी सैनिकों को इसको पढ़ने के निम्नलिखित कारण हैं–

- एक सैनिक को हथियारों का प्रयोग करने में सक्षम तथा अत्यंत पेशेवर होना चाहिए।
- देश की सेना को हर समय युद्ध के लिए तैयार रखना होता है। इसलिए सेना को हर समय युद्ध के लिए तैयार रखने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित करना होता है।
- एक अच्छी सेना वह होती है, जो अपनी रणनीति और युक्तियों से अच्छी योजना बना सके और युद्ध में उन्हें लागू कर सके। अतः युद्ध की कला सीखना बहुत ज़रुरी है।
- लड़ाई में अच्छी तरह शिक्षित और प्रशिक्षित सैनिक–खुश रहता है। उसका नैतिक बल ऊंचा होता है और वह युद्ध के लिए पूरे विश्वास के साथ जाता है।
- लोकतन्त्र में राजनेता सशस्त्र सेनाओं को युद्ध के लिए तैयार रहने का निर्देश देते हैं। सरकार की सहायता करने वाले मन्त्रियों, राजनेताओं और अधिकारियों को सेना के बारे में जानकारी होनी चाहिए। क्योंकि वह फैसले करते हैं कि सेना को कैसे संगठित किया जाए, ज़रुरत के समय लड़ने का निर्देश देते हैं तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की योजना बनाते और लागू करते हैं।

1.3.1 सेना

एक सेना के प्रति कोई भी निर्णय उसके सैनिकों के प्रशिक्षण को देख कर ही किया जाता है। अच्छी तरह से प्रशिक्षित सैनिक हमेशा अच्छा प्रदर्शन करते हैं। प्राचीन समय में और आज भी अच्छी तरह से प्रशिक्षित, नियमित सेना में विजयी होने का पूरा विश्वास होता है।

आपने क्या सीखा

- सैन्य विज्ञान, युद्ध और राष्ट्रीय सुरक्षा अध्ययन अथवा रणनीतिक अध्ययन ही सैन्य अध्ययन होता है। सशस्त्र सेनाओं के लिए यह अध्ययन करना ज़रुरी है, ताकि वे लोगों को युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं और विनाश जैसे खतरों से बचा सके। युद्ध लड़ने की कला में युद्ध जैसी स्थितियों और युद्ध से निपटने की कला है। युद्ध लड़ने की कला युद्ध जीतने की विभिन्न रणनीतियों और युक्तियों को लागू करने योग्य बनना होता है।
- सैन्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में हथियार चलाने की कला, धनुष और तीर के प्रयोग करने की कला, युद्ध में घोड़ों के प्रयोग करने की कला तथा घोड़े की पीठ पर बैठ कर लड़ने की कला शामिल होती है।
- सैन्य अध्ययन के कई महत्वपूर्ण पक्ष हैं जैसे क्षेत्र, युक्तियां, मानचित्र और एस्ट्रॉनामी, सैनिक नेतृत्व, युद्ध सामग्री इत्यादि। सैनिकों के पास युद्ध के दौरान एक आचार संहिता होती है। बूढ़े लोगों, महिलाओं, बच्चों तथा अपंग एवं समर्पण कर चुके सैनिकों को मारना नैतिकता के विरुद्ध है।

- एक संगठित और अनुशासित सेना के लिए सैन्य अध्ययन की ज़रुरत होती है। विभिन्न प्रकार के हथियारों का प्रयोग करने तथा लोगों की रक्षा के लिए हर समय विश्वास के साथ युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए सैन्य अध्ययन अनिवार्य है।

पाठान्त प्रश्न

1. 'युक्ति' और 'रणनीति' में अन्तर कीजिए।
2. किन-किन लोगों को सैन्य अध्ययन करना चाहिए?
3. युद्ध जीतने के लिए क्षेत्र का अध्ययन क्यों ज़रुरी है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. सैन्य अध्ययन को सैन्य संगठनों के अध्ययन, देश के सामने खतरों के विश्लेषण, युद्ध की कला तथा सेना को देश की सेवा में प्रयोग करने के तरीकों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

2. युद्ध को दो शत्रुओं के बीच लड़ाई की गतिविधि के रुप में परिभाषित किया जाता है। युद्ध में प्रयुक्त युक्तियों और रणनीतियों को युद्ध लड़ने की कला कहा जाता है।

3. रणनीतियों, युक्तियों और सामग्री की रचना के लिए उस क्षेत्र का अध्ययन महत्वपूर्ण है, जहां युद्ध लड़ा जाना है। इससे शत्रु पर काबू पाने तथा युद्ध को जीतने में सहायता मिलेगी।